PRESS CLEARING-INDIA Tele;29543184 Mobile:9350208747,9311666709

NAME	PLACE	DATE
DAINIK JAGRAN	New Delhi	10 JAN 2009

...दिलों में बसता है हिन्दुस्तान

प्रवासी भारतीय दिवस पर विशेष

प्रवासी भारतीयों में दुनिया भर में अपनी पहचान बनाकर भारत को गौरवान्वित किया है। वे कामयाबी की राह पर अनवरत अग्रसर हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि विदेश में सक्रिय होने के बावजूद इन प्रवासी भारतीयों का दिल आज भी पूरी तरह से हिंदुस्तानी है। मातृभूमि से जुड़ाव का आलम यह है कि वतन की कोई भी परेशानी उनसे देखी नहीं जाती। यही कारण है कि वे अपने मूल देश के लिए कुछ करने का कोई मौका नहीं छोड़ना चाहते। वे यथा संभव मदद के लिए तत्पर रहते हैं। कुछ ने तो इसके लिए बाकायदा एनजीओ तक बना रखे हैं, ताकि उसके माध्यम से वे अपनी मातृभूमि की लगातार सेवा कर सकें। इस सीरीज में आगे पढ़ें वतन से जुड़े कुछ और प्रवासियों भारतीयों के बारे में

विदेश में रहकर वतन के लिए काम करने का जज्बा

जनवरी 2007 में बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा प्रवासी भारतीयों के लिए आयोजित समारोह में डा. राज्य नारायण ने शिरकत क्या की, उनके दिल में भी जन्मभूमि के लिए कुछ करने की चाहत जग गई। कोसी नदी के कहर को जानने के बाद उन्होंने इंग्लैंड जाकर एक ऐसी संस्था बनाने का निश्चय किया, जो मातृभूमि के लिए काम करे। उन्होंने अपने कुछ एनआरआई दोस्तों के साथ मिलकर सितंबर 2007 में ब्रिटेन में ही बिहार फाउंडेशन के नाम से संस्था बनाई। वह इसके सचिव हैं। उनके पिता डा. महेंद्र नारायण के नाम पर गठित एक अन्य गैर-सरकारी संस्था भी बिहार में काम कर रही है। उनकी संस्था एक अन्य एनजीओ 'प्रयास' के साथ मिलकर बिहार के बाढ़ पीड़ितों के लिए काम कर रही है। उनकी संस्था ने बिहार सरकार से अनुमति लेकर सुपौल इलाके के एक सरकारी अस्पताल को अपने संरक्षण में लिया है, जिसके माध्यम से वह गरीबों में जरूरी दवाएं वितरित कर रही है।

इसके अलावा, बिहार फाउंडेशन, यूके ने डा.महेंद्र नारायण फाउंडेशन के साथ मिलकर एक मोबाइल हेल्थ वैन भी लांच की है, जिससे चिकित्सकों की टीम बिहार के गांवों में जाकर डायबिटीज, ब्लड प्रेशर व आंखों की मुफ्त जांच करेगी।

गरीब बच्चों का भविष्य संवार रहे रैना

वे भले ही भारत से हजारों मील दूर हैं, लेकिन उनके दिल में हिंदुस्तान बसता है। आज भी वे देश के विकास में पूरा योगदान दे रहे हैं। जब-जब देश में प्राकृतिक आपदा आई या गरीबों के घर उजड़े, उन्हें नया आशियाना प्रदान कर सैकड़ों लोगों के सपने टूटने से बचाए हैं रॉबिन रैना ने।

रैना फाउंडेशन नामक संस्था के संस्थापक रॉबिन मूल रूप से जम्मू-कश्मीर के निवासी हैं। वह फिलहाल अमेरिकी कंपनी ईबीक्स के अध्यक्ष हैं। अमेरिका के अटलांटा शहर में रहने वाले रैना आठ वर्ष पूर्व कंपनी के किसी काम से भारत आए। इसी दौरान उनके मन में अपने वतन के गरीबों की सहायता की भावना जागी। इसके लिए उन्होंने 2004 में गैर-सरकारी संस्था रैना फाउंडेशन की नींव रखी और फिर इसके माध्यम से मदद का अभियान शुरू कर दिया।

अभी लगभग 4000 बच्चे रैना फाउंडेशन द्वारा संचालित स्कूलों में निःशुल्क शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। रॉबिन रैना ने जेजे कालोनी, बवाना व नोएडा में स्कूल तथा मध्य दिल्ली में 300 नेत्रहीन बच्चों को गोद भी लिया है। ब्लाइंड स्कूल खोल नेत्रहीन बच्चों का भविष्य भी चमका रहे हैं। इसके अलावा, वह मुंबई में आर्थिक रूप से कमजोर लड़कियों की बेहतर शिक्षा के लिए भी स्कूल संचालित कर रहे हैं।

रैना ने दिल्ली की बवाना स्थित जेजे कालोनी में 370 पक्के घर बनवाए हैं, जिनमें 90 घर उनके मालिकों को सौंप भी दिए गए।

एमएनसी बॉस बन गया स्कूल मास्टर

एक एमएनसी का बॉस कब अपनी मातृभूमि की लड़कियों को पढ़ाने के लिए स्कूल शिक्षक बन गया यह खुद उसे भी नहीं पता चला। डुपॉट कंपनी के साउथ एशिया के हेड के पद पर काम कर चुके सैम ने वर्ष 2000 में स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ली और चले आए अपने पैत्रिक शहर अनूपशहर। इस समय वह वोकेशनल स्कूल चला रहे हैं जिसमें लगभग 46 गांवों की करीब एक हजार लड़कियां शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। सैम परदादा परदादी एजुकेशनल सोसायटी नाम से एक एनजीओ चला रहे हैं। अब वह साल में एक बार अमेरिका जाते है। सैम जब भारत आए थे तो सोचा था कि अगर स्कूल नहीं चला पाए तो तीन साल में लौट जाएंगे, लेकिन वह अपने इरादों में सफल हुए और यहीं के होकर रह गए।

प्रस्तुति : मनीषा खत्री/कल्पना बिष्ट,
नई दिल्ली/बाहरी दिल्ली